(३० जनवरी ८५ गांधी पुण्य तिथि पर विशेष)

कहाँ खोजें–महात्मा को?

महात्मा गांधी जीवित थे तब उनके आश्रम में चर्चा चलती थी कि जिस तरह गांधी–जयंती उत्साह के साथ मनायी जाती है उसी उत्साह से मृत्यु के बाद उनकी पुण्य–तिथि भी मनायी जानी चाहिए। गांधीजी के मृत्यु के बाद कुछ मात्रा में यह होता भी है। गुजरात में एक स्थान पर गांधी पुण्यतिथि के कार्यक्रम के अंतर्गत कोई १०,००० स्त्री–पुरुष एक साथ बैठकर चरखे से सूत कातते हैं। हर ३० जनवरी को दिल्ली में गांधी–व्याख्यान होता हैं जो राष्ट्र के परिप्रेक्ष में अपना महत्व रखता है। देश भर में ऐसे कई कार्यक्रम होते हैं। फिर भी कई लोग कई बार प्रश्न उठाते हैं कि क्या महात्मा गांधी भुला दिए गए हैं? पर क्या गांधीजी जैसे कभी मर सकते हैं?

इन दिनों उडीसा में हुई एक चर्चा गोष्ठी में आए पश्चिम जर्मनी के प्रसिद्ध लेखक डेटलेव कोटोस्की ने एक वैचारिक बम छेडा जब उन्होंने कहा कि 'हम पश्चिम लोग नई प्रतिष्ठा देकर महात्मा गांधी को भारत भेजेंगे।' आज की पाश्चात्य दुनिया में प्रो. कोटोस्की जैसे विचार रखने वाले बुद्धिजीवियों की संख्या बढ रही है। बल्कि इससे भी बढकर आज पश्चिम का जनसाधारण भी गांधीजी को अधिक याद करने लगा है। हाल में मेरी पश्चिमी देशों की यात्रा के समय कुछ संस्मरण याद आ रहें हैं।

न्यूरेन बर्ग शहर के नाम द्वितीय महायुद्ध के साथ जुडा हुआ है। इंग्लैंड के बमों के शहर ध्वंस हो गया था जो आज फिर से नई चहल–पहल के साथ सक्रिय दिखाई पडता है। हम लोग शहर के बीच बाजार जा रहे थे तब हमारी नजर एक विचित्र दृश्य पर पडी। दस लडकियां जिनकी उम्र २० से २२ के बीच की होगी एक दूसरे के हाथ पकड कर एक गोलाई में खडी थीं।उन की पीठ गोलाई के भीतर की तरफ और मुंह बाहर की ओर।गले में लटकाए हुए पुठ्ठेके बोर्डो पर जर्मन भाषा में मोटे अक्षरों में लिखा गया था। मैंने चाहा कि उन बहनों से पूछू कि वे क्यों ऐसे धूप में खडी हैं? तो गोलाई के बाहर खडी एक बहन ने मुझे बताया, 'ये बहनें आज दिनभर बोलेंगी नहीं, ऐसे ही मौन खडी रहेंगी। इनकी विरोध प्रदर्शन की तख्तियों पर जर्मन लोगों से दक्षिण आफ्रिका की वस्तु नहीं खरीदने की अपील है।' फल–सब्जी से लेकर सोने के गहने तक दक्षिण आफ्रिका का माल यूरोप के देशों में बिकने आता है और सस्ते भी रहता है। लेकिन आज दक्षिण आफ्रिका वहां के बाशिंदे काले लोगों का गोरे लोगों द्वारा शोषण के आधार पर ही चल रहा है व यूरोप के तरुणों को अनुभव हो रहा है कि शोषण के प्रतीक दक्षिण आफ्रिका को सुधारने का एक मार्ग बहिष्कार का है। वे बीलते हैं कि गांधी–चल–चित्र देख–कर उनको आसुरी–शक्ति का सभ्य तरीकों से मुकाबला करने की एक दिशा मिली।

पश्चिम जर्मनी की राजधानी के बोन में हम लोग चार दिन रुके थे। उन्हीं दिनों वहां शासन के निमंत्रण पर आए हुए थे–दक्षिण आफ्रिका के राष्ट्रपति बाथा। स्थिति इसलिये विचित्र थी की आर्थिक फायदे के कारण पश्चिम जर्मनी की सरकार ने बोथा को निमंत्रित किया था जबकि वहां की जनता विशेषकर युवा जन बोथा और उनके वर्ण द्वेषी सरकार के सख्त विरोध में थे। शाम को बोथा के स्वागत के समय काले झंडे और विरोधी नारों के बोर्ड लिये हजारों–युवक–युवतियां स्वागत स्थान पर पहुंच गए। अनचाहा मेहमान बोथा के अपना विरोध का स्वागत तो मिल गया लेकिन पुलिस की सहायता से स्वागत कार्यक्रम हुआ।

मैं विरोध प्रदर्शन में भाग लेने का इच्छुक था पर ठीक उसी समय मुझे एक युवा–समारोह में मुख्य अतिथि होकर जाना था। समारोह की शुरू–आत ही हो रही थी कि जब उस विरोध प्रदर्शन में भाग लेकर कई युवक–युवतियां लौटकर कुछ देरी से सभा में आए। वे नव जवान इतने उद्विग्न थे कि मैंने कहा कि पहले उन उद्विग्न युवक युवतियों की बाते सुन ले।

वे उद्विग्न होकर ही बोले। उनकी बातों से एक विचार सामने आया, 'हम लोगों ने प्रयास किया कि हमारा प्रदर्शन पूर्ण रूप से अहिंसक रहे। लेकिन मुठ्ठी भर पुलिस वालों ने आकर हम १० हजार प्रदर्शनकारि। को अश्रु गैस से नाकाम कर दियायों क्या ऐसे अवसर पर अहिंसक होते हुए भी कुछ पत्थर बाजी करना गलत होगा?

उनके बाद मुझे बोलना था और सबने बडी शांति से सुना। मैंने ही दो बातें उनके सामने रखी–(१)जैसे हिंसक कार्य में भी एक दम पूर्ण सफ–लता नहीं मिलती है, अहिंसक प्रयोग में भी एक दम सफलता नहीं मिलती हैं। गांधीजी को कई असफलताओ का सामना करना पडा था। (२)जैसे हिंसक लडाई में हैं वैसे ही अहिंसक प्रयोगो में भी सग–ठन व प्रशिक्षण बहुत जरूरी हैं। अहिंसक संगठन के लिए सामूहिक रच–नात्मक कार्य महायक होते है। उसके अभाव में निराशा, असफलता के खतरे बने रहते हैं। अहिंसक शांति सैनिक कभी निराश नहीं होता हैं। मेरे भाषण के बाद जो प्रश्न पूंछे गए उससे अनुभव हुआ कि ये युवक-युव–तियां गंभीरता के साथ अपनी सभी समस्याओं का अहिंसक हल खोज रहे है।

दोनों जर्मनी देशों में सबसे बडा शहर है बर्लिन। बर्लिन में हम लोग राज्य के अतिथि रहे। शासन ने हम लोगों के लिए बर्लिन दर्शन आदि कई दिलचस्प कार्यक्रम रखे थे जिसमें बर्लिन सिंफोनी वाद्य वृन्द का कार्यक्रम अत्यंत रोचक था। पर हम लोगो को सबसे अधिक आनंद आया एक जर्मन नव युवक पीटर रुह के साथ कुछ घंटे बिताने में।

पीटर केवल १५–२० दिन के लिए दिल्ली आया था और तब उसका संपर्क कुछ गांधी विचारकों के साथ आया। वह इतना प्रेरित हुआ कि उसको लगा कि जर्मनी की जनता को गांधीजी के अहिंसक मार्ग से अवगत कराना चाहिए। अपने ही पैसे व परिश्रम से पीटर गांधीजी से संबंधित बहुत से चित्र, साधन(चरखा, झोपडी का नमूना आदि) कई किताबें जर्मनी ले गया और वहां एक बृहद 'गांधी प्रदर्शनी' का आयोजन किया। उस प्रदर्शनी को देखने का हमको भी मौका मिला। निःसंदेह उसका वह एक अत्यंत प्रशंसनीय प्रयास था।

इस बार के यूरोप–अमेरिका प्रवास में केवल पश्चिम और पूर्व जर्मनी में मोटार से १०,००० किलो मीटर घूमना हुआ। छः सप्ताह के प्रवास में केवल एक सप्ताह हमारा फ्रांस में बीता। तीन माह से अधिक बाहर रहने के बाद भारत लौटकर जब सोचने लगा तो सैंकडों अनुभवों में सबसे अधिक प्रभावशाली रहा हमारा एक सप्ताह का 'आर्क' दर्शन। फ्रान्स की राजधानी पेरिस से १००० किलो मीटर दक्षिण में ३०० एकड ऊबड–खाबड जंगली जमीन पर 'आर्क' की स्थापना हुई है। वहां पहुंचने पर अनु भव होता है कि हम गांधीजी के बनाए आश्रम में आ गए। रात के समय ३०० एकड क्षेत्र में बिजली का एक भी लट्टू नहीं। खेती का काम हाथ से या घोडों से होता है।

सभी १५० आश्रमवासी एक परि-वार के रूप में रहते है। आश्रम के कार्य में पवित्रता का वातावरण बना रहता है। हर समय कोई १५–२० देशों के लोग वहां बने रहते है पर भोजन नाश्ता सभी शाकाहारी। सभी आश्रमवासी प्रातःकाल सामूहिक प्रार्थना व सामूहिक जलपान के बाद सफाई, खेंती, लकडी काटना, डबल रोटी बनाना, गोपालन आदि कार्यो में बट जाते है। कार्य के बीच में एक–एक घंटे पर घंटी बजती है। घंटी बजते ही सभी भाई–बहनें जो भी काम में हो उसे छोडकर बाहर प्रकृति की गोद में आकर दो मिनिट शांत खडे प्रार्थना करके फिर वापस अपनें काम में लग जाते है। शाम को फिर से प्रार्थना। दिन से जब थोडी भी धूप रहती है तो समूह भोजन बाहर होता है। वैसे वहां तो प्रतिदिन वन भोजन का आनंद मिलता है।

इटली में जन्मे श्री लान्जा देल वास्तो छोटी उम्र ही सामाजिक क्रांति के विचारवान व्यक्ति। लम्बे विचार और अनुभव के बाद उनका दृढ विश्वास हुआ कि हिंसा से लाई नई क्रांति उससे बडी हिंसा ने नष्ट की जा सकती है। उनका विचार पुष्ट हुआ जब उन्होंने यही बात गांधीजी के विचारों में पाई। – – – वे गांधीजी के अनुयायी बन गए और उनका नाम 'शांति दास' पडा। शांति दास अपने कार्य में इतने तत्पर थे कि जब आश्रम की कल्पना मन में आई तो भारत के आश्रम का अवलोकन किया और ८–९ माह आचार्य विनोबा भावे के साथ उनके पवनार आश्रम में रहे। शांतिदास को केवल आश्रम की भौतिक रचना नहीं बल्कि उसके पीछे की भावना और अध्यात्म प्रवृत्तियों का भी अध्ययन करना था।

आज शांतिदास नहीं रहें। उनकी समाधि कुछ पेडों की छाव मेंहै। एक सरल ईसाई क्रास मात्र। उस स्थान पर मन को शांति मिलती है।

आज आधुनिकता, बडे उद्योगों से निर्मित प्रदूषण, मानसिक अवस्था आदि से संतप्त पश्चिम के कई स्त्री–पुरुष. विशेषकर युवजन आर्क जाते है वहां वे राहत की सांस लेते हैं। अब इटली, स्विटजरलैंड, जर्मनी, अमेरिका आदि देशो में कई केन्द्र आर्क के नमूने पर बनने की योजना बनी है। लोगों में खूब उत्साह है। शांतिदासजी का स्थान लेने वाले पीटर ने भी अपना नाम "मोहनदास" रख लिया है। आर्क की परम्परा को चालू रखा है।

यूरोप के भ्रमण के बाद हम लोग अमेरिका के लिए रवाना हुए। न्यूयार्क का कनडी हवाई अड्डा दुनिया का बहुत बडा अड्डा है। आज कल भार तीयों को वीसा देरी से मिलता है। अमेरिका में प्रवेश के समय कुछ जवाब तलब होता है। मुझसे भी सवाल पूछा गया कि आपके पास पोर्ट में आपका काम समाज सेवा लिया है उसका अर्थ क्या? मैंने कहा– "गांधी का नाम सुना है?" वे बोले–'महात्मा गांधी? मैं अवश्य सुना है।"मैंने कहां–" हां, मैं उन्ही का काम करता हूं। आज वे जीवित नहीं पर हम लोग मानते हैं कि उनके मार्ग की जरुरत है। उनका उत्तर था–हां, हां हम भी ऐसे ही समजते हैं। आइए, आपको अमेरिका में स्वागत हैं, गांधीजी का नाम वहां हर कोई जानता है और बार-बार उनके नाम का उल्लेख किया जाता है। बडे–छोटे सब उनसे प्रेरणा लेते हैं।

पश्चिम की बैठकों की प्रथा है कि भाषण के बाद प्रश्नोत्तर अवश्य रहता है। कई सभाओं में जिनमें अधिकांश छात्र–छात्राएं रहती थीं। युवक-युव-तियां अवश्य पूछते थे, "आपने गांधी फिल्म देखी?" "क्या वह ईमानदारी से चित्रित की गई है"–––फिर प्रश्न आता था, "क्या हमारा आज की समस्याओं का गांधी-मार्ग में समाधान प्राप्त हो सकेगा?"

मेरे आंकलन में उनकी मुख्य सम-स्याएं थीं– (१) विश्व को अण्वस्त्र के युद्ध से कैसे बचाएं। (२) मानव सभ्यता से पूर्ण हनन हो रहे निसर्ग की कैसे रक्षा की जाए? (३) औद्यो-गीकृत देशों में बढती हुई बेरोजगारी को कैसे मिटाया जाए?

ये और अन्य कई समस्याओं की गांधीजी ने दीर्घ चर्चा की है। उन चर्चाओं से पश्चिम के लोगों को काफी रोशनी मिलती है और वे लोग गंभी-रता पूर्वक उस ओर ध्यान दे रहे हैं। समस्याएं जटिल हो रही हैं इसीलिए गांधीजी की याद भी अधिक से अधिक हो रही है। अनेक लोगों को लग रहा है कि गांधीजी का ही रास्ता व्याव-हारिक है। हां, कुछ तब्दिलियां की जा सकती हैं।

हम भारतवासियों के लिए पश्चिम की एक कसौटी भी है, 'गांधी फिल्म से विश्व भर में गांधीजी के प्रति एक विशेष उत्साह व श्रद्धा जागी हैं। उससे विश्व को लाभ मिले भारत ऐसी कोई योजना सोच रहा हैं?"